ग्रीष्म ऋतु में पशु–प्रबंधन | कृषि कुंभ (जुलाई 2023), खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 104–107

ग्रीष्म ऋतु में पशु–प्रबंधन

मयंक दुबे
बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, भारत।
Email Id: mayanksitu@gmail.com

भारत विश्व का सर्वाधिक दुग्ध उत्पादक देश है जो कुल 221.06 मिलियन लीटर दूध प्रतिवर्ष उत्पादित करता है जो वैश्विक दुग्धोत्पादन का लगभग 19 प्रतिशत है एवं 3.67 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रहा है। पशुओं का कृषि में भी बहुतायत से उपयोग किया जाता है, भारत के कुल कृषि का 50 प्रतिशत भाग आज भी पशु शक्ति पर निर्भर है। भारत की अर्थ व्यवस्था में कृषि का योगदान 16 प्रतिशत है जिसमे हमारे पशुधन का योगदान 4 प्रतिशत है भारत एक उष्ण कटिबंधीय देश है जिसका औसत तापमान 30 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहता है परन्तु यह ग्रीष्म ऋतू में बढ़ कर 45 से 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। वैसे तो प्रकृति में ग्रीष्म ऋतू का अपना विशिष्ट योगदान है क्योकि ग्रीष्म ऋतू कि तीव्रता ही वर्षा को आमंत्रित करती है किन्तु ग्रीष्म ऋतू सभी प्राणिओ को प्रभावित करती है चाहे वो पशु पक्षी हो या फिर मनुष्य या दुधारू पशुओं मुख्यतः संकर नस्ल की गाये एवं भैंसे को यह सर्वाधिक प्रभावित करती है।

गर्मी के मौसम का नर पशुओं की प्रजनन क्षमता पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। नर पशुओं में वीर्य उत्पादन व गुणवत्ता में कमी आती है तथा उनमें कामुकता की भी कमी देखी जाती है। भैंसों में यह दुष्प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। उनके शरीर का काला रंग तथा बालों की कमी उष्मा को अधिक अवशोषित करती है। इसके अतिरिक्ति भैंसों में पसीने की ग्रन्थियाँ गायों की अपेक्षा बहुत कम होती है, जिसके कारण भैंसों को शरीर से उष्मा निकालने में अधिक कठिनाई होती है। ऐसे गरम वातावरण में मादा पशुओं का मद काल लम्बा हो जाता है और मदावस्था का काल एवं उग्रता दोनों ही काफी मद्विम पड़ जाते है तथा पशुओं में अमादकता की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है।

ग्रीष्म ऋतू का पशुओं पर पड़ने वाल दुष्प्रभाव

1. ग्रीष्म ऋतू में वातावरण का तापमान बढ़ जाता है साथ ही वायु में आद्रता घट जाती है।
2. पशुओं के शरीर के तापमान में वृद्धि होना तथा दुग्ध उत्पादन में कमी का होना।
3. पशुओं को शरीर के तापमान को नियंत्रित करने में कठिनाई होती है।
4. पशु के आहार ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है तथा पशुओ को अपने शरीर को बनाये रखने के लिए आवश्यक ऊर्जा की मात्रा बढ़ जाती है जिससे उत्पादन के लिए कम ऊर्जा उपलब्ध हो पाती है जिससे पशुओ का उत्पादन घट जाता है।
5. पशु द्वारा मद् के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते।
6. तेज धुप में अधिक समय तक रहने पर पशु को साँस लेने में कठिनाई महसूस होने लगती है जिसे ग्रामीण भाषा में हाँफना भी कहते है क्योंकि उच्च

तापमान में पशु के शरीर का तापमान सामान्य नहीं रह पाता।

7. कई बार पशुओ को तेज धुप से लेकर तुरंत नहलाने से पशु को लू लग जाती से जिसमे पशुओ को दस्त लग जाते है पशु का आहार काम हो जाता है जिसका सीधा प्रभाव उत्पादन पर पड़ता है।
8. ग्रीष्म ऋतू में अत्यधिक तापमान की वजह से पशुओ की बीमारियों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है अर्थात पशु बीमारियों के लिए संवेदनशील हो जाता है।

गर्मी के मौसम मे दुग्ध उत्पादन व पशुओं की शारीरिक क्षमता बनाए रखने के लिए एवं ग्रीष्म ऋतू में पशुओं पर पड़ने वाले कुप्रभावों को नियंत्रित करने निम्नलिखित विंदुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है–

ग्रीष्म ऋतू में पशुओं का आवास प्रबंधन

सभी जीवित प्राणियों मे आवास का एक महत्वपूर्ण स्थान है ग्रीष्म ऋतु में डेयरी पशुओं में तापमान बढ़ने के कारण तनाव का होना स्वभाविक है ओर इसका निवारण पशु को बेहतर आवास देकर किया जा सकता है । पशु आवास को आरामदायक बनाने के लिए निम्न उपाय अपनाये जा सकते हैं।

- पशुओ के लिए आवास हेतु साफ–सुथरी व हवादार पशुशाला होनी चाहिए जिसका फर्श पक्का व फिसलन रहित हो तथा मूत्र व पानी की निकासी हेतु ढ़लान हो। पशुशाला की छत उष्मा की कुचालक हो ताकि गर्मियों में अत्यधिक गरम न हो। इसके लिए एस्बेस्ट्स सीट उपयोग में लायी जा सकती है।
- सूर्य की रोशनी को परावर्तन करने हेतु पशुशाला की छत पर सफेद रंग करना या चमकीली एल्युमिनियम की परत लगाना भी लाभप्रद पाया गया है।
- ग्रीष्म ऋतू में पशुओं को पर्याप्त छायादार स्थान पर बाँधना चाहिए। आवास के चारों और छायादार वृक्ष लगाने से पशु आवास को आरामदायक रखने में मदद मिलती है। इसके साथ ही पशु आवास के आसपास का भूभाग हरा भरा रखने से परावर्तित होकर आवास में प्रवेश करने वाले ऊष्मीय विकिरणों को कम किया जा सकता है।
- पशु आवास की ऊंचाई अधिक करने से पशुओं को गर्मी से राहत मिलती है। पशु आवास की छत की उचाई 10–15 फीट होनी चाहिए ताकि पशुओं को तापमान नियंत्रण में मदद मिले। पशु आवास के अंदर आने वाली धूप की मात्रा नियंत्रित करने के लिए दीवार के ऊपर वाले छत के भाग को लगभग 1 मीटर तक बाहर निकाला जा सकता है।
- पशु आवास गृह का निर्माण (केंद्रीय अक्ष) पूर्व से पश्चिम में करना चाहिए। आवास की लंबवत अक्ष पूर्व पश्चिम दिशा में रखने से आवास के अंदर कम धूप कर पाती है। अर्थात पशु आवास के द्वार उत्तर या दक्षिण दिशा में खुलने चाहिए ताकि आवास गृह में सूर्य कि किरणें सीधी न पड़े।
- पशुओ के आवास गृह में अधिक भीड़–भाड़ नही होनी चाहिए। प्रत्येक पशु को उसकी आवश्यकता के

अनुसार पर्याप्त स्थान उपलब्ध कराएं। एक वयस्क गाय व भैंस को 40 से 50 वर्गफुट स्थान की आवश्यकता होती है। मुक्त घर व्यवस्था में गाय व भैंसों को क्रमषः 35 व 40 वर्ग मीटर स्थान ढ़का हुआ तथा 7 व 8 वर्ग मीटर खुले बाड़े के रूप में प्रति पशु उपलबध होना चाहिए। शीघ्र ब्याने वाले पशुओं के लिए ढका हुआ क्षेत्र 12 वर्ग मीटर व उतनी ही जगह खुले क्षेत्र के रूप में उपलब्ध करानी चाहिए। प्रजनन हेतु सांड़ के लिए ढ़का क्षेत्र 12 वर्ग मीटर व खुला क्षेत्र 120 वर्ग मीटर होना चाहिए जिससे सांड़ को पर्याप्त व्यायाम मिलता रहता है, जो उसकी प्रजनन क्षमता को बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है।

- सीधे तेज धूप और लू से पशुओं को बचाने के लिए पशुओं को रखे जाने वाले पशु आवास के सामने की ओर खस या जूट के बोरे का पर्दा लटका देना चाहिये । इन पर्दो पर दिन के समय पानी छिड़कने से आवास के अंदर की गर्मी को कम करने में मदद मिलती है। तापमान अधिक होने पर पशु आवास की छत को 4 से 6 इंच मोटी पुआल, घास, भूसे, बुरादा इत्यादि से ढक देना चाहिए क्योकि ये सभी ऊष्मा के कुचालक होते है जिससे पशु आवास के अंदर का तापमान नियंत्रित रहता है।
- पशु आवास गृह में हवा के आने जाने के लिए पर्याप्त स्थान तथा वेंटिलेशन होना चाहिए ताकि आवास गृह के अंदर गर्मी तथा उमस न बड़े। पशुशाला में पंखों का होना भी लाभप्रद होता है अतः पंखे, कूलर, फव्वारे, फोगर, को पशु आवास के अंदर लगाकर पशुओं को गर्मी से निजात दिलाने में मदद मिलती है। फव्वारों के साथ.साथ पंखे चलाने पर पशुओं का अधिक आराम मिलता है।
- पशुओं के शरीर पर दिन में तीन या चार बार जब वायुमंडल तापमान अधिक हो, ठंड़े पानी का छिड़काव करें। शीतल जल उपलब्ध होने पर पशुओं को प्रतिदिन दो से तीन बार नहलाया जा सकता है। पशुओं को तालाब में भी नहलाया जा सकता है। लेकिन यदि दिन के समय तालाब के पानी का तापमान बढ़ जाता है तो फिर यह उपाय ठीक नहीं है। प्रयोगों से यह साबित हुआ है कि दोपहर को पशुओं पर ठंड़े पानी का छिड़काव उनके उत्पादन व प्रजनन क्षमता को बढ़ानें में सहायक होता है।

पशुओं का प्रजनन प्रबंधन

भारत जैसे उष्ण कटिबंधीय देश में पशुओं के कृत्रिम गर्भादान में वर्णित देशी नस्ले जैसे की गिर, साहीवाल, कांकरेज, थारपारकर या फिर गर्मी सह सकने योग्य विदेशी नस्ले जैसे जर्सी या एच एफ के संकर पशुओं का प्रयोग करना चाहिए। क्योकि भारत की वर्णित नस्ले देश में हजारो सालो से इसी तापमान में रह रही है अतः उन पर इस गर्मी का प्रभाव कम पड़ता है।

निम्नलिखित उपाय पशुओं के उत्पादन व प्रजनन क्षमता को बनाए रखने में मदद करते है–

1. पशु पर नजदीकी नजर रखी जानी चाहिए और उसके मदकाल में आने (गर्म होने), मदकाल की अवधि,

गर्भाधान, गर्भधारण और ब्याने का रिकॉर्ड रखा जाना चाहिए।

2. पशुओं का गर्भाधान समय पर कराया जाना चाहिए।
3. ब्याने के 60 से 80 दिनों के भीतर उद्दीपन या मदकाल आरंभ हो जाता है।
4. समय पर गर्भाधान कराने से ब्याने के दो–तीन महीनों के भीतर गर्भधारण कराया जा सकता है।
5. पशुओं का गर्भाधान तब कराया जाना चाहिए, जब वे मदकाल या उद्दीपन के चरम पर हों (अर्थात् मदकाल के 12 से 24 घण्टे के बीच)।
6. उच्चस्तरीय वीर्य का इस्तेमाल किया जाना चाहिए, विशेषकर अच्छे और तन्दुरुस्त सांडों के प्रशीतित वीर्य को तरजीह देनी चाहिए।

पशुओं का स्वास्थ्य प्रबंधन

ग्रीष्मऋतु का प्रभाव वैसे तो लगभग सभी प्रकार के पशुओं पर देखा गया है, परंतु सबसे अधिक प्रभाव संकर गाय, भैंसों पर तथा मुर्गियों पर होता है। यह भैंस के काले रंग, पसीने की कम ग्रंथियों तथा विशेष हार्मोन के प्रभाव के कारण होता है। जबकि मुर्गियों में पसीने वाली ग्रंथियों की अनुपस्थिति तथा अधिक शरीर तापमान के कारण होता है। इस मौसम में भैसों व संकर नस्ल गायों की प्रजनन क्षमता मंद हो जाती है तथा मदचक्र लम्बा हो जाता है एवं मद अवस्था का काल व उग्रता दोनों बढ़ जाती है। जिसके कारण पशुओं में गर्भधारण की संभावना काफी घट जाती है। नर पशु की प्रजनन क्षमता घट जाती है, नर पशु से प्राप्त वीर्य में शुक्राणु मृत्यु दर अधिक पाई जाती है। नर व मादा पशु की परिपक्वता अवधि बढ़ जाती है। गर्मी में पशुओं को आहार लेने में अरुचि होती है। दुधारू पशुओं के दुग्ध उत्पादन में कमी होना, आंख व नाक लाल होना, एवं हृदय की धड़कन का तेज होना पशु गहरी सांस लेता है व हाफने लगता है, पशु बेचौनी दिखाता है, छाया ढूंढता है तथा बैठता नहीं है इत्यादि लू या गर्मी लगने के लक्षण हैं। लू की चपेट में आने पर पशु को तुरंत चिकित्सक को दिखाएं। ग्रीष्म ऋतू में अत्यधिक तापमान की वजह से पशुओ की बीमारियों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है अर्थात पशु बीमारियों के लिए संवेदनशील हो जाता है। पशुओं का इस मौसम में गलाघोंटू, खुरपका मुंहपका, लंगड़ी बुखार आदि बीमारियों से बचाने के लिए टीकाकरण जरूर कराना चाहिये जिससे वे आगे आने वाले बरसात के मौसम में इन बीमारियों से बचे रहें। सीधे तेज धूप और लू से पशुओं को बचाने के लिए पशुशाला के मुख्य द्वार पर खस या जूट के बोरे का पर्दा लगाना चाहिये। इन उपायों और निर्देशों को अपना कर दुधारू पशुओं की देखभाल एवं नवजात पशुओं की देखभाल उचित तरीके से की जा सकती है और गर्मी के प्रकोप और से बीमारियों से बचाते हुए उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।